

# मनवा ले सतगुरु की शरण तिरण रो अवसर आयो रे लिरिक्स



मनवा ले सतगुरु की शरण,  
तिरण रो अवसर आयो रे।bd।

---

शुभ कर्मा से मनुष्य तन पायो,  
अजब सोच मन में नहीं लायो,  
बनकर आयो बिंद,  
नींद में कैसे सुतो रे,  
मनवा लें सतगुरु की शरण,  
तिरण रो अवसर आयो रे।bd।

---

जो जीव अपनी मुक्ति चाहो,  
दसदोस ने दूर हटाओ,  
पानी पहली पाल बांध ले,  
गाफिल कई सुतो रे,  
मनवा लें सतगुरु की शरण,  
तिरण रो अवसर आयो रे।bd।

---

चोरी जारी जीव और हत्या,  
निन्दा गाली मिथ्या ओर पतिया,  
हर्ष शोक अभिमान,  
ई दस मत लाये रे,  
मनवा लें सतगुरु की शरण,  
तिरण रो अवसर आयो रे।bd।

---

राजा रावण और शिशुपाला,  
पकड़ कंठ बाणासुर मारा,  
ऐसा ऐसा भूप हुआ धरती पर,  
जारो पत्तों नी पायो रे,  
मनवा लें सतगुरु की शरण,  
तिरण रो अवसर आयो रे।bd।

---



फिर चोरियासी में गोता खावेगा,  
पकड़ सांच तज झूठ,  
मारग थने सीधो बतायो रे,  
मनवा लें सतगुरु की शरण,  
तिरण रो अवसर आयो रे।bd।

---

रामानंद गुरु साची रे केवे,  
जाग जीव थने हेला रे देवें,  
कहे कबीर विचार मनक,  
तन मुश्किल पायो रे,  
मनवा लें सतगुरु की शरण,  
तिरण रो अवसर आयो रे।bd।

---

मनवा ले सतगुरु की शरण,  
तिरण रो अवसर आयो रे।bd।

गायक – गोपाल दास वैष्णव ।  
प्रेषक – शुभम लोहार ।  
**9057207846**

---